संथाल परगना के संथाल समाज के बीच प्रवसन एवं आजीविका

: एक मानवशास्त्रीय अध्ययन

<u>पीएच० डी० पंजीयन हेतु एक शोध प्रारूप</u>

स्नातकोत्तर मानवशास्त्र विभाग (समाज विज्ञान संकाय)

शोध निर्देशक

डॉ० अभिनय कुमार

सहायक प्राध्यापक
मानवशास्त्र विभाग
कार्तिक उराँव महाविद्यालय, गुमला,
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

शोधार्थी

एलिजाबेथ किस्कू

स्नातकोत्तर मानवशास्त्र विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

राँची विश्वविद्यालय, राँची 2024

संथाल परगना के संथाल समाज के बीच प्रवसन एवं आजीविका : एक मानवशास्त्रीय अध्ययन

भूमिका (Introduction) :

भारत में अनेक जनजातीयां निवास करती है, जिनमे संथाल एक जनजाति है। संथाल जनजाति की जनसंख्या 1991 जनगणना के अनुसार 20,67,039 एवं 2001 जनगणना के अनुसार 24,10,509 थी। जो अब वर्तमान 2011 जनगणना के अनुसार झारखंड में संथाल जनजाति की आबादी 27,54,723 है। यह झारखंड की कुल अनुसूचित जनजाति आबादी का 31.86 प्रतिशत है। संथाल, झारखंड की सबसे बड़ी जनजाति है। झारखंड में मुख्यतः संथाल परगना क्षेत्र में बहुतयात में निवास करती है। इसके अलावा अन्य जिले गिरिडीह ,हजारीबाग, बोकारो ,धनबाद ,रामगढ़, सिंहभूम, सरायकेला ,में भी पाई जाती है। संथाल प्रोटो-ऑस्ट्रालायड प्रजाति के अंतर्गत आते हैं। इनकी भाषा समूह ऑस्ट्रिक है जो संथाली भाषा का प्रयोग करते हैं। संथालों के उत्पत्ति के संदर्भ में अनेक मत है। उनकी उत्पत्ति और विकास की कहानीयाँ लोकगीतों और कथाओं के द्वारा पता चलता है। संथाल मानते हैं उनके पूर्वज पीलचू- हाड़ाम व पिलचू बूढ़ी का जन्म हिहिड़ी पिपिड़ी में हुआ था। पिलचू हड़ाम एवं बूढ़ी के 7 पुत्रों व 7 पुत्रियाँ का जन्म हुआ जो आपस में विवाह कर लिए थे। सात पुत्रों को सात गोत्र (पारिस) में विभाजित किया गया। ये गोत्र थे- हाँसदा,किस्कू, हेंब्रम,मुर्मू ,सोरेन, मरांडी ,टुडू। इन सातों पुत्रों से वंशों में वृद्धि हुई और वे भोजन व जीवन की तलाश में एक जगह से दूसरे जगह प्रवास करते गए। बाद में सासनबेडा में पांच नए गोत्र का निर्माण हुआ- बास्के, बेसरा, चौड़े ,पावरिया, बेदिया। इस तरह संथलों में कुल 12 गोत्र होते हैं।

झारखंड में सर्वप्रथम हजारीबाग में इनका प्रवेश हुआ, वहां से पश्चिम बंगाल और बाद में अधिक मात्रा में संथाल परगना क्षेत्र में आकर बस गए पहले इन्हें खेरवार कहा जाता था। पश्चिम बंगाल के संतभूम में उनके शांत स्वभाव के कारण संनताड़ कहलाए जो बाद में संताल और संथाल कहलाने लगे।

संथाल प्रायः जंगलों को साफ करके कृषि योग्य जमीन तैयार करते हैं और वही सुव्यवस्थित गांव बनाकर निवास करते हैं। उनके गांव का प्रमुख मांझी होता है। अपने आजीविका के लिए मुख्यतः कृषि करते हैं कुछ मजदूरी करके भी जीवन यापन करते हैं। संथालों की संस्कृति बहुत समृद्ध है, आज भी संथाल अपनी संस्कृति और परंपरा को बचाए रखे हैं। संथाल समाज में भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा का चलन नहीं है। संथाल जन्म से लेकर विवाह तथा मृत्यु जैसे संस्कारों को गंभीरता से पालन करती है संथाल में विवाह को बापला कहा जाता है इनमें सम गोत्र विवाह वर्जित है। किरिञ बापला सबसे प्रचलित विवाह है।

यौन अपराध के लिए बीटलाहा जैसी सजा का प्रावधान है जो सबसे कठोर सजा मानी जाती है।

संथाल प्रकृति पूजक होते हैं ,साल वृक्ष को पवित्र माना जाता है। प्रत्येक गांव में जाहेर थान होता है। जहां जाहेर आयो निवास करती है। जो गांव को प्रत्येक मुसीबत से बचाती है। सिंगबोंगा संथालो का प्रमुख देवता माना जाता है। इसके अलावा दूसरा प्रमुख देवता मारगं बुरू है, धार्मिक प्रधान नायके कहलाता है। जिनके द्वारा पूजा पाठ का कार्य संपन्न किया जाता है। संथालों का प्रमुख त्योहार बाहा, सोहराय, दसांय, करम, माघ आदि है। संथालों की संस्कृति अभी भी संथाल बचा के रखे हुए हैं।

प्रवसन : मनुष्य कि यह प्रवृत्ति होती है कि वह हमेशा बेहतर जीवन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है। अपने मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति खाद्य संकलन शिकार आदि की तलाश में मानव प्रारंभ से ही प्रवसन करते आया है। यह एक भौगोलिक एवं सामाजिक प्रक्रिया है। प्रवसन का अर्थ है, एक क्षेत्र की जनसंख्या का दूसरे क्षेत्र की ओर प्रस्थान अर्थात व्यक्तियों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसने की प्रक्रिया को प्रवसन कहते हैं। प्रवसन को समझने के लिए हमें प्रवसन की परिभाषा समझना जरूरी है।

वेनबर्ग के अनुसार, "मानव प्रवासन एक मौसमी श्रमिक के मामले में एक सराहनीय अवधि के लिए स्थायी रूप से या अस्थायी रूप से स्थान परिवर्तन के रूप में होता है।

(गोसल, 1961) प्रवास एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो अक्सर प्रवासी लोगों से संबंधित सामाजिक-आर्थिक, जनसांख्यिकीय, सांस्कृतिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करती है। प्रवास केवल लोगों का एक निवास स्थान से दूसरे स्थान पर जाना नहीं है। यह लगातार बदलते स्थान सामग्री और क्षेत्रों के स्थान संबंधों को समझने के लिए सबसे मौलिक है।

सफा के अनुसार (सिंह, 1989), "प्रवसन को आम तौर पर एक आर्थिक घटना के रूप में देखा जाता है, हालांकि गैर-आर्थिक कारकों का कुछ असर होता है।

श्रीवास्तव (2011), मानव जीवन की शुरुआत से ही प्रवास प्रक्रिया सबसे गतिशील मानवीय गतिविधियों में से एक रही है। शुरुआती दिनों में लोग वन उत्पादों की तलाश में एक जंगल से दूसरे जंगल में जाते थे। जब अधिकांश लोगों ने वन जीवन को त्याग दिया और सभ्य जीवन को अपनाया तो उन्होंने पालतू जानवरों और उपजाऊ भूमि के साथ संबंध विकसित किए। परिणामस्वरूप, प्रवासियों की गतिशीलता पुरुषों की है ।

विकिपीडिया के अनुसार, "मानव प्रवास लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थायी या अस्थायी रूप से बसने के इरादे से किया जाने वाला आंदोलन है।"

किशोर और किरण, (2013) **प्रवसन आज एक विश्वव्यापी घटना है और हमारे समय में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। ।**

सुंदरी, (2007)**प्रवसन मनुष्यों के लिए वरदान और अभिशाप दोनों रहा है, खासकर आदिवासी लोगों के लिए ।**

प्रवसन के अनेक प्रकार है यथा आंतरिक प्रवसन (Internal migration), **बाह्य प्रवसन**(External Migration), **विविशतापूर्ण प्रवसन**(Forced migration), **स्वैच्छिक प्रवसन** (Voluntary migration), **अस्थायी प्रवसन** (Temporary migration), **उलट प्रवसन या रिवर्स माइग्रेशन** (Reverse migration) **इन सभी प्रकारों में से यह समझने का प्रयास किया जाएगा की कौन-कौन से प्रकार संथाल समाज में विद्यमान है।**

प्रवसन के कारक भी विभिन्न प्रकार के हैं यथा आर्थिक कारक :- **प्रतिकर्ष कारक** (Push Factors) : **गरीबी निम्न उत्पादकता और बेरोजगारी जैसे आर्थिक कठिनाइयां के कारण संथाल लोगों को प्रवसन के लिए प्रेरित करती है जैसे सूखे के कारण कम पैदावार ,रोजगार के लिए बड़े शहरों की ओर ये प्रवसन करते हैं। अपकर्ष कारक** (Pull Factors): **बेहतर रोजगार अवसर, उच्च वेतन और जीवन की बेहतर संभावनाएं के लिए संथाल परगना के अधिकतर लोग रांची या अन्य शहरों में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवसन करते आ रहे हैं। इसी तरह सामाजिक - सांस्कृतिक कारक, आर्थिक कारक, राजनीतिक कारक, पर्यावरणीय कारक आदि संथाल समाजों में विद्यमान है और इन सभी कारकों के कारण संथाल समाज में प्रवसन निरंतर जारी है। इस शोध के अंतर्गत संथाल परिवार के समाज के बीच किस-किस प्रकार के प्रवसन हो रहे हैं और उसके कौन-कौन से कारक है इसका गहन विश्लेषण करने का प्रयास किया जाएगा।**

झारखंड के संथाल जनजाति जो संथाल परगना क्षेत्र में निवास करती है। उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि है । अधिकतर संथालो के पास जमीन है लेकिन सिंचाई सुविधा या वित्तीय सहायता की कमी के कारण केवल एक साल में एक बार ही फसल की पैदावार कर पाते है। कृषि भूमि होने पर भी अच्छी पैदावार उतनी नहीं हो पाती है क्योंकि संथालों की कृषि भी पारंपरिक तरीके से होती है। ये आधुनिकता व वैज्ञानिक खेती पद्धति से कोसों दूर है। इस कारण संथाल जनजाति के लोग आजीविका के लिए वैकल्पिक अवसरों की तलाश करते है। कृषि के अलावा संथालों के आजीविका का दूसरा साधन मछली पकड़ना एवं शिकार करना है। समतल जंगल से विभिन्न तरह के सब्जियां, पत्तियां, फल आदि बेचकर जीविका के लिए जरूरत की चीज खरीदते हैं या मजदूरी करके जीवन यापन करते हैं। रोजगार की कमी के कारण उचित मजदूरी न मिलने के कारण संथालो को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में गरीब परिवार के लिए प्रवसन

ही एकमात्र विकल्प है।

ऐतिहासिक विश्लेषण से पता चलता है कि संथाल ब्रिटिश काल से ही संथाल परगना जिले में निवास कर रहे हैं। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संतालों ने घने जंगलों को साफ किया और अपने लिए गांव बसाए। संतालों ने जंगल साफ किए और खेती योग्य जमीन बनाई। संताल खेती और कृषि गतिविधियों में अच्छे थे। संथालों के पास खेती योग्य जमीन होने के कारण अंग्रेज उनसे भू-राजस्व वसूलने में सक्षम थे । यह पाया गया है कि अतीत में कई बार सूखे और अकाल की घटनाएं हुई हैं, जिससे संताल जनजाति की आजीविका प्रभावित हुई है। ऐसी स्थिति में संताल कृषि कार्य के लिए बारिंद भूमि (पश्चिम बंगाल में पश्चिम दिनाजपुर) या बागड़ी (मुर्शिदाबाद जिला) चले गए। उनमें से बड़ी संख्या में कृषि कार्यों के लिए पश्चिम बंगाल के अन्य हिस्सों खासकर बर्दमान जिले में भी चले गए। कई गरीब परिवार अपने घरों में ताला लगाकर, अपने मवेशियों को रिश्तेदारों के हवाले कर खेती के काम के लिए पश्चिम बंगाल के मैदानी इलाकों में पलायन कर जाते हैं। लगभग सभी संताल आदिवासी परिवारों के पास खेती के लिए जमीन है, लेकिन सिंचाई सुविधा और वित्तीय सहायता के अभाव में वे केवल एक ही फसल उगा पाते हैं। खेती के अलावा इस क्षेत्र में रोजगार के अन्य अवसर शून्य हैं। ऐसी स्थिति में गरीब परिवारों के लिए पलायन ही एकमात्र विकल्प है। देखा गया है कि कई गरीब संताल आदिवासी परिवार रोजगार के लिए हर साल एक से तीन महीने के लिए पलायन करते रहते हैं।

संथाल परगना के संथालो में प्रवसन एक बहुत बड़ी समस्या बन गई जिसे सरकार द्वारा योजनाएं चलाकर या रोजगार के अवसर में वृद्धि करके प्रवसन को कम करने की कोशिश सरकार द्वारा किया जा रहा है।

पूर्व में किए गए साहित्यों की समीक्षा (Review of Literature):

संथाल जनजातियों पर लिखने वाले आरंभिक लेखकों में ई. टी. डाल्टन, एच एच रिज्ले, एफ, बी, ब्रैडले बर्ट, डब्लू, क्रूक तथा डब्लू, जे, कल्शों आदि का नाम आता है। ई.टी. डाल्टन: डिस्क्रिप्टिव एथनोलौजी ऑफ बंगाल कलकत्ता 1872 ,एच. एच. रिज्ले : दि पिपुल ऑफ इण्डिया नई दिल्ली 1915, एफ. बी. ब्रैडले बर्ट दि स्टोरी ऑफ एन इण्डियन उपलैण्ड लंदन 1905, डब्लू, जे. कल्शों दि संथाल रिबेलियन मैन इन इण्डिया, भाग 25, सं, 4 1945 । चूंकि इनमे से अधिकांशतः प्रशासकीय पद पर थे, अतः इनके द्वारा किया गया अध्ययन मुख्यतः मानवशास्त्रीय अध्ययन है जो आदिवासियों को शासन के दायरे में लाने में सहायक हुआ । इन सभी का अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

बोडिंग, पी०ओ० ने (1898) में संथाल जनजाति के संस्कृति में प्रचलित प्रथाओं एवं निषेधों का विश्लेषण के साथ-साथ संथालों की चिकित्सा पद्धतियों की धारणाओं का विश्लेषण किये हैं । 1925 में प्रकाशित "पुस्तक" संथाल फोक-टेल्स (3Vol.) में संथाल समाज के सांस्कृतिक रिती-रीवाज का विश्लेषण एवं लोक कथाओं के संबंध को संदर्भित किया है। (1932) में प्रकाशित ए संताली डिक्शनरी के माध्यम से संथाली शब्दावलियों को अंग्रेजी में अनुवाद कर उनका विश्लेषण किये हैं । (1942)' में प्रकाशित पुस्तक "ट्रडिशन एण्ड इन्स्टीट्यूशन ऑफ दी संथाल में संथाल जनजाति की उत्पत्ति के साथ-साथ संस्कृति , रीति-रिवाजों का विश्लेषण किया है। इनका सभी अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

शेरविल (1854) ने संथाल परगना के 'दामिन-इ-कोह' क्षेत्र के आदिवासियों की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना पर प्रकाश डाला है। इनके अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

बॉल, बी. (1880) ने संथाल परगना के दामिन क्षेत्र के निवासियों के जीवन, वन्य पशुओं तथा वनस्पतियों का वर्णन प्रस्तुत किया है। इनके अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

मैकफर्सन (1909) ने संथाल परगना के जनजातियों की जनांकिकीय तथा कृषि विशेषताओं का विश्लेषण किया है। इनके अध्ययन जनांकिकीय तथा कृषि विशेषताओं तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

मैकफैले (1922) ने अपनी पुस्तक "दि स्टोरी ऑफ दि संथाल्स" में संथाल जनजाति की उत्पत्ति का विश्लेषण किये हैं। इन्होंने संथाल को "पिलुच हाड़ाम" तथा "पिलुच बुढ़ी" का संतान की संज्ञा दिए हैं। इसके साथ-साथ संथाल जनजातीय के संस्कृति का भी विश्लेषण किये हैं। इनके उत्पत्ति एवं पुस्तक के अन्य तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

मलै, ओ0 (1938) ने संथाल परगना के आदिवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनैतिक प्रणाली पर प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत किये है। इनके अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

गुहा, बी० एस ० (1944) अपनी पुस्तक रेसियल एलिमेन्टेस इन दि पोपुलेशन में भारतीय मानव समुदायों को उनके शारीरिक विशेषताओं के आधार पर विभिन्न प्रजातीय भागों में बांटा। इनके अनुसार संथाल जनजाति प्रोट्रोऑस्ट्रोलायड समूह के अंतर्गत आते हैं। इनके प्रजातीय अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

चौधरी, पी. सी. (1965) ने अपनी पुस्तक "बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर्स-संथाल पगरना" में संथाल के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किये हैं । साथ ही संथाल जनजाति कि चिकित्सा व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था एवं आर्थिक व्यवस्था उल्लेख किया है। इनके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, चिकित्सा व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था एवं आर्थिक व्यवस्था संबंधित अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

विधार्थी एवं राय (1976) ने अपनी पुस्तक "द ट्राइबल कलचर ऑफ इंडिया" में संथाल जनजाति की संक्षिप्त चर्चा की है। इन्होंने संथाल को स्थायी कृषक जनजाति के रूप में प्रस्तुत किया है। साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक पहलू का भी वर्णन किये है। इनके पुस्तक के तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

पटेल, अर्जुन (2004) 'पैर्टन ऑफ डेवलपमेंट एण्ड ट्राइबल माइग्रेशनः ए केस ऑफ डांग्स एण्ड पंचमहल इन गुजरात' में स्पष्ट किया है कि जनजातियों की अर्थव्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रही है, जिसमें वनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इनके अर्थव्यवस्था संबंधित अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

प्रिया, देशिंगकर (2004) द्वारा लिखित यह पेपर इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि ग्रामीण शहरी प्रवास की बढ़ती गतिशीलता इसलिए हो रही है क्योंकि प्रवास की प्रकृति अस्थायी या मौसमी है। इस प्रकार का प्रवास प्रवासियों को मुख्य रूप से शहरी स्थान में गैर-कृषि गतिविधियों से धन प्रेषण के प्रवाह को बढ़ाने में मदद करता है, जो आसानी से उपलब्ध है। यह कृषि आय के बजाय गैर-कृषि गतिविधियों में आय सृजन के अवसर की मांग पैदा करता है, हालांकि ये अस्थायी प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे हैं। इनका अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

देशिंगकर और ग्रिम, (2005) के अनुसार विकासशील देशों में विद्यमान क्षेत्रीय असमानताएं

और असमान विकास कृषि की दृष्टि से पिछड़े और गरीब ग्रामीण क्षेत्रों से आंतरिक अस्थायी श्रम प्रवास को बढ़ावा देते हैं । हाशिम एम इमान (2005) यह शोध पत्र घाना में बच्चों के स्वतंत्र प्रवास के मुद्दे पर केंद्रित है। अध्ययन में पाया गया कि घाना में बड़ी संख्या में बच्चे अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने या ग्रामीण शहरी प्रवास प्रक्रिया से अपनी आय के माध्यम से स्कूल की फीस का प्रबंध करने के लिए पलायन करते हैं, जिससे उन्हें शहरी समकक्ष में पर्याप्त आय मिलती है। इनका अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

देवघरिया (2012) ने देखा कि छोटानागपुर और संताल परगना के आदिवासी काम और आजीविका के लिए अपने घर से पलायन कर रहे हैं। आदिवासी बड़े बांधों और खनन या अन्य विकास परियोजनाओं के शिकार रहे हैं। अनुभवजन्य रूप से रोजगार के अवसरों की कमी पलायन का अधिक प्रमुख कारण है। इस क्षेत्र के आदिवासी अपनी रोजी-रोटी के लिए शहरी क्षेत्रों में पलायन करते हैं। गुमला, सिमडेगा और लोहरदगा जिलों के गांवों में औसत प्रवास प्रति परिवार लगभग 2.3 सदस्य है। इन जिलों से मजदूर काम की उपलब्धता के कारण पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पलायन करते हैं। इनका अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

कुमार (2012) ने पाया कि झारखंड के दक्षिण छोटानागपुर के अनुसूचित जनजाति के मजदूर साल भर आजीविका के लिए पड़ोसी राज्यों में पलायन करते रहते हैं। गंतव्य स्थान पर वे निर्माण कार्य, होटल कर्मचारी, ईंट भट्टे, खदान कार्य, वृक्षारोपण और व्यावसायिक गतिविधियों जैसे विभिन्न प्रकार के काम करते हैं। कुछ स्थानों पर उन्हें आकस्मिक मजदूर, हेड लोडर, रिक्शा चालक और फेरीवाले के रूप में नियुक्त किया जाता है। दयनीय स्थिति यह है कि उन्हें बिना किसी सामाजिक सुरक्षा के कम भुगतान किया जाता है। इनका अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

स्केल्डन (2012)अस्थायी श्रम प्रवास को न केवल आंतरिक प्रवास के परिप्रेक्ष्य से बल्कि अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के परिप्रेक्ष्य से भी समझा और अध्ययन किया गया है। इसलिए, अस्थायी प्रवास के अध्ययन में तर्क की दो प्रमुख अकादमिक रेखाएँ पाई गई हैं: आंतरिक प्रवास पर

साहित्य जो आम तौर पर श्रम प्रवास के नए अर्थशास्त्र के विचार पर आधारित है और दूसरा है अंतर्राष्ट्रीयतावाद पर साहित्य। इनका अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

राव और मित्रा (2013) ने झारखंड के साहिबगंज जिले के कृषि प्रवासी मजदूरों की स्थिति का अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि झारखंड के साहिबगंज जिले से उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर तक मजदूरों का नियमित रूप से पलायन हो रहा है। खेतिहर मजदूर गरीबी से त्रस्त हैं और उनके पास उच्च मजदूरी के लिए सौदेबाजी की कोई शक्ति नहीं है। मजदूरों को लंबे समय तक, दिन में 18 घंटे तक काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, लेकिन उनके मासिक वेतन का एक अच्छा हिस्सा बिचौलियों या एजेंटों की जेब में चला जाता है। गंतव्य पर नियोक्ता प्रवासी मजदूरों को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि उनके पास सौदेबाजी की शक्ति नहीं होती है लेकिन वे स्थानीय श्रमिकों की तुलना में अधिक मेहनत करते हैं। इनका अध्ययन संथाल परगना के जामा प्रखंड के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

केशरी, कुणाल (2014) के शोध में विश्लेषण किया गया है कि अस्थायी श्रम प्रवास मुख्य रूप से एक ग्रामीण घटना है, जिसमें ग्रामीण से शहरी प्रवास हावी है और यह उत्तर भारतीय राज्यों में अधिक प्रचलित है। बिहार, झारखंड, गुजरात, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और नागालैंड में अस्थायी श्रम प्रवास की तीव्रता बहुत अधिक है। हालांकि, अंतर-राज्यीय स्तर पर उल्लेखनीय क्षेत्रीय भिन्नता पाई जाती है और समृद्ध राज्यों में गरीबी के कुछ क्षेत्र मौजूद हैं, जहां से सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूह बड़ी संख्या में पलायन करते हैं। अस्थायी श्रम प्रवास की दर स्थायी श्रम प्रवास दर से सात गुना अधिक है। कम शैक्षणिक योग्यता वाले गरीब और वंचित जाति समूहों से संबंधित लोगों में अस्थायी श्रम प्रवास में शामिल होना यह दर्शाता है कि अस्थायी श्रम प्रवास मुख्य रूप से देश में जीवित रहने की रणनीति है, जो स्थायी श्रम प्रवास की घटना से अलग है। अस्थायी श्रम प्रवास की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह युवा आयु वर्ग की आबादी में अधिक प्रचलित है, जो युवा लोगों की अपने बच्चों और घर पर छोड़े गए बुजुर्गों को खिलाने के लिए अस्थायी रूप से प्रवास करने का निर्णय लेने की उच्च जोखिम लेने की क्षमता का स्पष्ट प्रकटीकरण है। जबकि, ग्रामीण से ग्रामीण अस्थायी प्रवासियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण नौकरी प्रदाता कृषि क्षेत्र है। अस्थायी श्रम प्रवास कम आय वाले मध्य और उत्तर भारतीय राज्यों में अधिक प्रचलित है। आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति और सामाजिक स्थिति में सुधार के साथ

अस्थायी श्रम प्रवास की प्रवृत्ति कम हो जाती है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में सामाजिक कारक इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं। अस्थायी श्रम प्रवास का खराब आर्थिक स्थिति से जुड़ाव और पिछड़े राज्यों में इसका उच्च प्रचलन यह दर्शाता है कि अस्थायी श्रम प्रवास मुख्य रूप से संकट से प्रेरित प्रवास है। ऐसा इसलिए है क्योंकि केंद्र और राज्य सरकारों दोनों ने अपनी नीतियों और कार्यक्रमों में श्रम प्रवास पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है। इनका अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

कुमार (2014) ने अपनी पुस्तक "संथाली भाषा लोकगीत एवं नृत्य" में संथाल जनजाति के लोकगीतों में ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक पक्षों का विश्लेषण किये है। इनके संथाली भाषा लोकगीत एवं नृत्य अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

रॉय (2016) ने देखा कि संथाल आदिवासी मजदूर ब्रिटिश काल 1891 के दौरान चाय बागानों में मजदूर के रूप में पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में चले गए थे। संथाल आदिवासी अब जलपाईगुड़ी जिले के कई गांवों में जमीन और संपत्ति के साथ अच्छी तरह से बस गए हैं। संथाल प्रवासी मजदूरों ने अपनी भाषा, संस्कृति और परंपरा को बरकरार रखा है। इनका अध्ययन संथाल परगना के जामा प्रखंड के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

टुडु दामिन (2018) अपने शोध पत्र में यह विश्लेषण किया है कि पलायन के कारण संताल आदिवासी मजदूरों की आय और व्यय में वृद्धि हुई है और यह सौंपा गया है कि खपत में भी वृद्धि हुई है। यह दर्शाता है कि प्रवासन का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लेकिन अन्य तथ्य यह भी सच है कि प्रवासन सबसे अच्छा विकल्प नहीं बल्कि मजबूरी है। क्षेत्र में रोजगार के अवसर की कमी है। बड़े पैमाने पर प्रवासन से इलाके में श्रम की कमी पैदा होती है और स्थानीय भूमि और अन्य संसाधन अनुत्पादक रहते हैं। इनके शोध पत्र में दिए गए साहित्य समीक्षा का विश्लेषण कर मैंने शोध लेखन में आधार मानकर सम्मिलित किया है। इनका अध्ययन संथाल परगना के जामा प्रखंड के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

अमृता दत्ता , (2019) ग्रामीण बिहार में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों पर दीर्घकालिक शोध के आधार पर, थीसिस ने सबसे पहले प्रवास के निर्धारकों पर एक स्रोत क्षेत्र परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया, इसके बाद 2011 में ग्रामीण आय के स्रोतों का विश्लेषण, 1999 और 2011 के बीच इसमें हुए बदलावों का विश्लेषण किया और अंत में प्रवास के प्रभावों का आकलन किया। इनका अध्ययन संथाल परगना के संथाल जनजाति में प्रवसन पर पुरी तरह केन्द्रीत नहीं है। फिर भी इनके अध्ययन तथ्य को आधार बनाकर मैं संथाल परगना के संथाल जनजातियों में प्रवसन संबंधित तथ्यों का संकलन करने के उपरांत प्राप्त सभी तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण कर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूंगी।

कुजूर आर एवं मिंज एस.के.(2021) के अध्ययन में विश्लेषण किया गया है कि आदिवासियों के बीच प्रवसन बेहतर आजीविका के विकल्प से अधिक मजबूरी का परिणाम है। वास्तव में, ये गरीब आदिवासी न केवल कठिन जीवन का अनुभव करते हैं, बल्कि अपने नए गंतव्य में अक्सर मानवाधिकारों के उल्लंघन का भी शिकार होते हैं, बस अपनी संकटपूर्ण स्थिति से निपटने के लिए कमाते हैं, लेकिन पूंजी संचय करने के लिए कोई भी रास्ता मदद नहीं करता है। इनके प्रवासन एवं बेहतर आजीविका अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

टुडु, मनीश चन्द्र (2018) ने संथाल जनजातियों के बीच देशज ज्ञान से संबंधित विषय पर प्रकाश डालें हैं। लेकिन इनका अध्ययन संथाल जनजातियों के प्रवसन पर आधारित नहीं है, फिर भी इनके तथ्यों को आधार मानकर संथाल जनजाति पर अध्ययन कर विश्लेषण करने का प्रयास करूंगी। इनके संथाल जनजातियों के बीच देशज ज्ञान अध्ययन तथ्यों को मैं अपने शोध संकलित आंकड़ों के परिणामों के निष्कर्ष निकालने के दौरान तुलनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयोग करूंगी।

समस्या की कथन (Statement of the Problem):

संथाल कई दशकों से कृषि के कमज़ोर मौसम में रोज़गार के अवसरों की तलाश में पड़ोसी राज्यों या अन्य स्थानों पर पलायन कर रहे हैं। पलायन ने निश्चित रूप से संथाल आदिवासियों को नियमित काम और आय प्राप्त करने में मदद की है और इसके परिणामस्वरूप उपभोग व्यय में वृद्धि हुई है। लेकिन प्रवासी परिवारों के बीच शायद ही आर्थिक विकास ध्यान देने योग्य है। पलायन आदिवासी समूह के लिए कई समस्याओं का कारण बनता है। प्रवासियों द्वारा उपेक्षा के कारण भूमि क्षरण होता है। खेती गौण हो गई है क्योंकि प्रवासी अपने खेतों में खेती करने की तुलना में पलायन पर अधिक निर्भर हैं। पलायन बच्चों की शिक्षा में बाधा बन जाता है क्योंकि बच्चों को विकास और वृद्धि के लिए पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। कई बार प्रवासी शोषण, मानव तस्करी और बीमारी का

शिकार हो जाते हैं। इसलिए क्या विश्लेषण का विषय है कि प्रवसन का प्रभाव सकारात्मक है या नकारात्मक। इस शोध के माध्यम से झारखंड के संथाल परगना के संथाल समाज के बीच प्रवसन एवं आजीविका का मानवशास्त्रीय विश्लेषण किया जाएगा।

शोध के उद्देश्य (Objective of the Research) :

1. प्रवसन की अवधारणा को समझते हुए संथाल परगना में प्रवसन से संबंधित मुद्दों एवं कारकों का गहन अध्ययन करना।

2. संथाल जनजाति की सामाजिक-आर्थिक क्रियाकलाप एवं भौतिक संस्कृति का विश्लेषण करने के साथ - साथ प्रवसन के कारण इन पर होने वाले प्रभाव को प्रकाश में लाना।

3. प्रवसन के कारण संथाल जनजातीय समाज के आजीविका और खाद्य सुरक्षा पर होने वाले सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करना।

4. संथाल जनजातियों में प्रवसन, पारंपरिक संस्कृति और आधुनिकता के बीच के समन्वय को प्रकाश में लाना।

5. संथाल जनजातीय समाज में घर के मुखिया के प्रवसन के उपरांत महिलाओं, युवाओं एवं वृद्धजनों कि समाज निर्वहन में भूमिका को प्रकाश में लाना।

6. संथाल जनजातीय समाज के बीच प्रवसन को रोकने के लिए किया गया सरकारी प्रयासों एवं वर्तमान समस्याओं को प्रकाश में लाना।

शोध प्रश्न (Research Questions):

1. प्रवसन की क्या अवधारणा है ? एवं संथाल परगना में प्रवसन से संबंधित कौन-कौन से मुद्दों एवं कारक विद्यमान है जो संथाल समाज को प्रभावित कर रहा है?

2. संथाल जनजाति की सामाजिक-आर्थिक, क्रियाकलाप एवं भौतिक संस्कृति का क्या स्वरूप है? एवं प्रवसन का इन पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

3. प्रवसन का संथाल जनजातीय समाज के आजीविका और खाद्य सुरक्षा पर क्या-क्या सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ा है?

4. संथाल जनजाति के लोग किस प्रकार प्रवसन, पारंपरिक संस्कृति और आधुनिकता के बीच के समन्वय बनाए हैं?

5. संथाल जनजातीय समाज में घर के मुखिया के प्रवसन के उपरांत महिलाऐं, युवाऐं एवं वृद्धजन किस तरह से समाज निर्वहन में भूमिका निभा रहे हैं?

6. संथाल जनजातीय समाज के बीच प्रवसन को रोकने के लिए कौन-कौन से सरकारी प्रयास किए गए हैं? एवं वर्तमान में संथाल समाज के लोग कौन-कौन सी समस्याओं से जूझ रहे हैं?

शोध कार्य प्रणाली (Research Methodology) :

तथ्य संकलन की विधि (Method of data collection)

वर्तमान शोध कार्य झारखंड के दुमका जिला के जामा प्रखंड के दो गांव फूलोंपानी एवं मुंहजोबा, रामगढ़ प्रखंड के गंडक गांव और जरमुंडी प्रखंड के झिलुवा गांव के अंतर्गत गहन क्षेत्र कार्य कर पूरा किया जाएगा। क्षेत्र कार्य में प्राथमिक आंकड़ों की संकलन के लिए मानवशास्त्रीय तकनीकों यथा अनुसूची, साक्षात्कार, वैयक्तिक अध्ययन ,जीवन इतिहास ,छायाचित्र, अवलोकन, वंशावली सारणी एवं जरूरत अनुसार प्रश्नावली का प्रयोग किया जाएगा। संथालों में प्रवसन की स्थिति एवं भूमिका को जानने के लिए पूर्व में संथाल जनजाति पर हुए शोध दस्तावेज को अंगीकृत किया जाएगा। साथ ही-साथ जरूरत अनुसार अन्य आंकड़ों के संकलन लिए द्वितीयक स्रोतों यथा पुस्तक, इंटरनेट एवं शोध पत्र-पत्रिकाएं आदि का भी सहायोग लिया जाएगा।

यह शोध कार्य मुख्यत गुणात्मक आंकड़ों पर आधारित होगा तथा यथासंभव परीणात्मक आंकड़ों का भी विश्लेषण विभिन्न सारणीयों एवं पाई चार्ट के माध्यम से किया जाएगा।

शोध क्षेत्र /अध्ययन क्षेत्र (Research Area/ Study Area)

इस शोध कार्य के लिए संथाल परगना प्रमंडल के दुमका जिला के अंतर्गत जामा प्रखंड के दो गांव फूलोंपानी एवं मुंहजोबा और रामगढ़ प्रखंड के गंडक गांव और जरमुंडी प्रखंड के झिलुवा गांव का चयन किया गया है।

झारखंड में कुल 24 जिले हैं, जिनमें दुमका भी एक जिला है। संथाल परगना झारखंड के कमिश्नरी में से एक है। संथाल परगना कमिश्नरी की मुख्यालय दुमका है। वर्तमान में, इस प्रशासनिक क्षेत्र में छह जिले शामिल हैं: गोड्डा, देवघर, दुमका, जामताड़ा, साहिबगंज और पाकुड़। दुमका जिला झारखंड की राजधानी रांची से लगभग 365 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार झारखंड की कुल क्षेत्रफल 79714 वर्ग किलोमीटर है, तथा जनसंख्या 32988134 है। दुमका में कुल 10 प्रखंड हैं। जिनमें जामा, रामगढ़ और जरमुंडी भी प्रखंड है। 2011 के जनगणना के अनुसार जामा

प्रखंड की कुल जनसंख्या 137963 तथा क्षेत्रफल लगभग 391.46 वर्ग किलोमीटर है। रामगढ़ प्रखंड कुल जनसंख्या 161821 तथा क्षेत्रफल लगभग 13 41 वर्ग किलोमीटर है। जरमुंडी प्रखंड की कुल जनसंख्या 168163 तथा क्षेत्रफल लगभग 39 3.57 वर्ग किलोमीटर है।

शोध क्षेत्र के चार गांवों में संथाल जनजाति की जनसंख्या अधिक होने कारण शोध कार्य के लिए चयन किया गया गांव है, जो निम्न है:-

(i) **फूलोपानी** - फूलोपानी गांव जामा प्रखंड के अंतर्गत आता है। इस गांव में 191 परिवार निवास करती हैं। गांव की कुल जनसंख्या 894 है। जिसमें पुरुषों की संख्या 447 एवं महिलाओं की संख्या 447 है।

(ii) **मुँहजोबा** - मुँहजोबा गांव जामा प्रखंड के अंतर्गत आता है। इस गांव में 120 परिवार हैं। गांव की कुल जनसंख्या 644 है। जिसमें पुरुषों की संख्या 318 और महिलाओं की संख्या 326 है।

(iii) **गंडक** - गंडक गांव रामगढ़ प्रखंड के अंतर्गत आता है। इस गांव में 89 परिवार हैं। गांव की कुल जनसंख्या 396 है। जिसमें पुरुषों की संख्या 194 और महिलाओं की संख्या 202 है।

(iv)**झिलुवा** - झिलुवा गांव जरमुंडी प्रखंड के अंतर्गत आता है। इस गांव में 100 परिवार निवास करती है। गांव की कुल जनसंख्या 541 है। जिसमें पुरुषों की संख्या 264 और महिलाओं की संख्या 277 है।

उपरोक्त सभी गांवों में संथाल जनजाति के साथ-साथ अन्य जातियों के लोग रहते हैं। गांव की आजीविका का मुख्य साधन कृषि मजदूरी जंगली उत्पाद आदि हैं।

अध्ययन की इकाई (Unit of the Study)

सूचना प्राप्त करने के लिए सुविधा एवं उद्देश्य पूर्ण ढंग से चुने गए चारों गांवों के सभी वर्ग (बच्चे ,व्यस्क, एवं वृद्धजनों) के पुरुषों एवं महिलाओं को शामिल किया जाएगा जो संबंधित विषय से संबंधित हैं।

प्रतिदर्श का आकार (Sample Size)

प्रत्येक गांव से 25-25 अर्थात चारों गांव से कुल 100 संथाल परिवारों को उद्देश्य पूर्ण ढंग से चयन किया जाएगा एवं संबंधित पंचायत के मुखिया, सरपंच, वार्ड सदस्य प्राथमिक विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केंद्र शिक्षक शिक्षिका सहायिका एवं सेविका को शामिल किया जाएगा।

आंकड़ों या तथ्यों के संकलन तकनीक (Techniques of Data Collection)

आंकड़ों के संकलन के लिए शोधकर्ता के द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के स्रोतों का प्रयोग किया जाएगा जो शोध उद्देश्य की आवश्यकता को पूरा करती है।

- **प्राथमिक स्रोत** (Primary Source)

इस शोध के तथ्यों का संकलन के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में विभिन्न मानवशास्त्रीय तकनीकों यथा अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, वैयक्तिक अध्ययन, वंशावली सारणी, प्रश्नावली, छायाचित्र, एवं मानचित्रों आदि का प्रयोग किया जाएगा।

- **द्वितीयक स्रोत** (Secondary Source)

इसके अंतर्गत प्रवसन से संबंधित लिखित स्रोत जैसे -पुस्तकें,लेख पत्र- पत्रिकाएं, शोध पत्र तथा इंटरनेट में उपलब्ध सूचनाओं आदि का प्रयोग द्वितीयक स्रोत के रूप में तथ्यों के संकलन हेतु प्रयोग किया जाएगा।

आंकड़ों का विश्लेषण (Analysis of the Data) :

आंकड़ों का विश्लेषण मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार से किया जाएगा। मानचित्रण एवं छायाचित्र का प्रयोग किया जाएगा। आंकड़ों का विश्लेषण तालिकाबद्ध रूप से किया जाएगा तथा आरेखीय विधियों को भी प्रयोग में लाया जाएगा। संथाल जनजाति के प्रत्येक परिवारों के सूचनादाता या मुख्य सूचनादाता से प्राप्त सुचनाओं के मात्रात्मक विश्लेषण के लिए एक तालिका बनाया जाएगा एवं गुणात्मक विश्लेषण के लिए प्राप्त तथ्यों को संकलित करने के बाद इसके एक एक तथ्य का विश्लेषण एवं वर्गीकरण किया जाएगा।

अध्ययन का महत्व (Significance of The Study) :

संथाल आदिवासी मजबूत किसान रहे हैं फिर भी वे परिवार की खपत के लिए पर्याप्त उत्पादन करने में असमर्थ हैं। दूसरी ओर इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर कम हैं इसलिए संथाल आदिवासी जीवित रहने और जीविका के लिए पलायन करने के लिए मजबूर हैं। प्रत्येक शोध का अपना एक महत्तव होता है मेरा यह शोध आने वाले समय में छात्रों को प्रवसन की अवधारणा को नवीन परिपेक्ष्य में समझने में सहयाक सिद्ध होगा। यह शोध ग्रामीण क्षेत्र में मनरेगा से पलायन में कमी के परिणाम को समझने में सहायक सिद्ध होगा। प्रवसन के कारण संथाल जनजातियों के पारंपरिक संस्कृति और आधुनिकता के बीच समन्वय के तथ्यों को समझने में सहायक सिद्ध होगा। यह शोध प्रवसन के कारण संथाल जनजातियों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा कैसे प्रभावित हुई है ? का विश्लेषण करने में सहायक सिद्ध होगी। यह शोध प्रवसन एवं इसके कारकों के साथ-साथ संथाल जनजातियोंके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगी।

अध्ययन या शोध की प्रासंगिकता (Relevance of the Study or Research) :

संथाल के विकास के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न योजनायें चलाई जाती हैं जो उनके आर्थिक व सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इसके बावजूद भी संथाल जनजातियों के बीच वर्तमान में पलायन हो रही है। सरकार पलायन को रोकने के लिए मनरेगा योजना का संचालन कर रही है इसके बावजूद भी संथाल जनजातीय समाज के बीच पलायन निरंतर जारी है। इसलिए यहां यह शोध आवश्यक हो जाती है कि संथाल जनजातीय समाज के बीच पलायन को रोकने के लिए कौन-कौन से कदम उठाने चाहिए और संथाल जनजातियों के संस्कृति एवं परंपराओं को जीवित रखा जाए। इसके अलावा आशातीत परिणाम यह होगा कि लोग जागरूक एवं सजग होंगे कि कौन-कौन से विकासात्मक कार्य उनके एवं गांव या समाज का विकास के लिए किया जा रहा है। यह शोध प्रवसन के विभिन्न आयामों के साथ-साथ संथाल जनजाति के सामाजिक- आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ समस्याओं का भी विश्लेषण करेगा, जिससे योजना निर्माता और सरकार के नीति निर्माता के लिए सहायक सिद्ध होगा।

वर्तमान ज्ञान में योगदान (Contribution to the existing Knowledge) :

प्रस्तावित शोध अध्ययन वर्तमान ज्ञान की उस अनछुए पहलूओं के अध्ययन में मदद करेगा जो संथाल जनजातीय समाज के बीच अभी तक नहीं हो पाया है। साथ ही यह विकास के उस मॉडल की पहुंच को सुनिश्चित करने के संभावित उपायों की बात करेगा । यह शोध प्रवसन के साथ-साथ संथाल जनजातियों के विभिन्न आयाम को समझने के साथ - साथ ज्ञान की खाई को पाटने में सहायक सिद्ध होगी।

भविष्य के कार्य (Future Work) :

इस शोध के माध्यम से प्रवसन के विभिन्न आयाम को प्रकाश में लाया जाएगा। संथाल में प्रवसन मानव विकास की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है और सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे प्रवसन को रोकना प्रतिकूल स्थितियों को भी पैदा कर सकता है या नहीं, यह शोध इस तथ्य का भविष्य में विश्लेषण करेगा। यह शोध समावेशी विकास सुनिश्चित करने एवं संकट प्रेरित प्रवास को कम करने के लिये केंद्रित नीतियों, रणनीतियों और संस्थागत तंत्रों का विश्लेषण करेगा, जिससे संथाल में गरीबी में कमी हो। यह शोध भविष्य में यह भी विश्लेषण करेगी की किस प्रकार राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार रोज़गार के और अवसर का विकास करे कि संथाल जनजाति रोजगारोन्मुख बनाने में सक्रिय भूमिकाएं निभा सकें और इनके बीच प्रवसन की दर कम हो। साथ ही साथ यह शोध संथाल जनजाति के आजीविका एवं खाद्य सुरक्षा के विभिन्न आयाम का विश्लेषण करेगी और साथ में यह भी विश्लेषण करेगी कि इनकी आजीविका, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक -सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक क्रियाकलाप एवं परंपराएं प्रवसन से कैसे प्रभावित हुई

है। साथ ही साथ प्रवसन के कौन-कौन से कारक संथाल जनजातीय समाज में विद्यमान है जिसके कारण इनके बीच प्रवसन हो रही है का भी विश्लेषण इस शोध के माध्यम से किया जाएगा। अंततः इस शोध के माध्यम से या पता लगाया जाएगा कि संथाल समाज के महिलाएं , यूवाओ एवं वृद्ध जनों पर प्रवसन का कौन-कौन से सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, तथा नकारात्मक प्रभाव के क्या-क्या समाधान हो सकते हैं। कोई भी सामाजिक शोध अपने आप में पूर्ण नहीं होता है। इस शोध से जो निष्कर्ष निकलेंगे, वह निश्चित रूप से भविष्य में होने वाले संबंधित शोध में सहायक सिद्ध होगी।

संभावित अध्यायीकरण (Tentative Chapterisation):

अध्याय 1. अध्ययन क्षेत्र का परिचय

अध्याय 2. संथाल जनजाति का परिचय

अध्याय 3. प्रवसन की अवधारणा

अध्याय 4. संथाल जनजाति की सामाजिक-आर्थिक क्रियाकलाप एवं भौतिक संस्कृति

अध्याय 5. प्रवसन : संथाल जनजातीय समाज के आजीविका और खाद्य सुरक्षा

अध्याय 6. संथाल जनजाति : प्रवसन, पारंपरिक संस्कृति और आधुनिकता के बीच के समन्वय

अध्याय 7. प्रवसन: महिलाओं, युवाओं एवं वृद्धजनों कि समाज निर्वहन में भूमिका

अध्याय 8. प्रवसन को रोकने के लिए किया गया सरकारी प्रयासों एवं वर्तमान समस्या

सारांश एवं निष्कर्ष

परिशिष्ट

संदर्भ सूची (Reference List) :

डाल्टन, ई० टी० (1873) "ट्राइबल हिस्ट्री ऑफ इस्टर्न इंडिया", कलकत्ता।

रिज्ले, एच एच (1891) द् ट्राइब्स कॉस्ट इन बंगाल, लंदन।

ओ० मौली, एल. एस. एस., (1910) "बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर", संथाल परगना, कलकत्ता

जे. एम. मैकफैले (1922), दि स्टोरी ऑफ दि संताल्स. कलकत्ता: थाकर, स्पींक एण्ड को.

पी.ओ. बोडिंग (1925), संथाल फॉक टेल्स, वॉल्यूम 1, न्यू दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस

बोडिंग, पी० ओ०(1925), " स्टडीज इन संथाल मेडिसिन एंड कनेक्टेड फोल्कलोर" (3 वॉल्यूम)

ग्रियर्सन, जी० ए० (1928), "लिंग्वस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया", कलकत्ता

गुहा, बी० एस० (1944), "रेसियल एलिमेंट्स इन पापुलेशन", आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफ़ोर्ड

कुलसां, डब्ल्यू० जे० (1949), "ट्राइब्ल हेरीटेज: ए स्टडी ऑफ द संथाल, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

प्रसाद, एम० (1961), लैंड एंड पीपुल का ट्राइबल बिहार, रांची ।

गोषल जी० एस० (1961), इंटरनल माइग्रेशन इन इंडिया -ए रीजनल एनालिसिस, द इंडियन ज्योग्राफिकल जनरल, 36-3

पी. सी. चौधरी (1965), बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर्स-संताल परगना, पटना: सुपेरिंटेंडेन्ट सेक्रेटेरियेट प्रेस

विद्यार्थी, एल० पी० (1970), सोशियो- कल्चरल इंप्लीकेशंस इन इंडिया: ए केस स्टडी ऑफ़ ट्राइबल बिहार, प्लैनिंग कमिशन, न्यू दिल्ली

एल. पी. विधार्थी, एण्ड बी. के. राय.(1976), दि ट्राइबल कलचर ऑफ इंडिया. न्यू दिल्ली: कन्शेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी

चट्टोराज, ए० के० (1986), “संथाल परगना के संथालः ए स्टडी इन ह्यूमन ज्योग्राफी”, पटना चन्दौला

कुमार, ए., (1986), “ट्राइबल कल्चर एण्ड इकोनामीः द माल पहाडिया ऑफ संथाल परगना", इंटर इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली

विद्यार्थी, ललिता प्रसाद एवं वर्मा, कृष्ण कुमार (1988) "बिहार के आदिवासी", संपा., शुक्ला बुक डिपो, पटना

सिंह आर० एन० (1989), इंपैक्ट ऑफ़ आउट- माइग्रेशन ऑन सोशियो - इकोनामिक कंडीशन: ए केस स्टडी ऑफ़ खुटना ब्लॉक ,अमर प्रकाशन, दिल्ली

डेसिनगकर प्रिया (जून 2004) अंडरस्टैंडिंग द इंप्लीकेंसन्स आफ माइग्रेशन फॉर प्रो-पुअर एग्रीकल्चरल ग्रोथ ;ओवरसीज डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट लंद

देसीनगकर ,पी. एंड ग्रीम एस. (2005) इंटरनल माइग्रेशन एंड डेवलपमेंट: ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव, पेपर प्रिपेयर्ड फॉर इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन (आइ ओ एम), जेनेवा: इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन।

इमान म हासिम (अगस्त 2005), एक्सप्लोरिंग द लिंकेजस बिटवीन चिल्ड्रन'एस इंडिपेंडेंट माइग्रेशन एन्ड एजुकेशन: एविडेंस फ्रॉम घाना; सक्सेस सेंटर फॉर माइग्रेशन रिसर्च

उरांव, पी० सी० (2005) "लैंड एण्ड पीपुल ऑफ झारखंड", ट्राइबल वेलफेयर रिसर्च इंस्टीच्यूट, राँची।

सुंदरी, एस० (2007), माइग्रेंट वूमेन एंड अर्बन लेबर मार्केट: कॉन्सेप्ट्स एंड केस स्टडीज ऑफ प्रॉब्लम्स, गेन्स, एंड लॉसेस। दीप एंड दीप पब्लिकेशन।

बोडिंग, पी.ओ. (2010), ए संताल डिक्शनरी वॉल्यूम 1, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस,न्यू दिल्ली

श्रीवास्तव आर० (2011), लेबर माइग्रेशन इन इंडिया: रिसेंट ट्रेंड्स, पैटर्न्स एंड पॉलिसी इश्यूज, द इंडियन जनरल ऑफ़ लेबर इकोनॉमिक्स, 54(3):411-440

देवघरिया, पी. सी. (2012), "सीजनल माइग्रेशन फ्रॉम रूरल एरियाज ऑफ़ झारखंड: ए स्टडी ऑफ रिमोट ट्राईबल विलेजेज ऑफ साउथ छोटा नागपुर रीजन", जनरल ऑफ़ इकनोमिक एंड सोशल डेवलपमेंट,8(1), पृ० स०.49-60

कुमार, ए. (2012) इकोनॉमिक्स ऑफ माइग्रेटिंग विलेजर्स ऑफ साउथ छोटा नागपुर रीजन ऑफ़ झारखंड: एन इमपेरिकल स्टडी, जनरल ऑफ़ इकनोमिक एंड सोशल डेवलपमेंट ,8(1), पृ० स०.125-133.

स्केल्डन, आर. (2012). गोइंग राउंड इन सर्कल्स: सर्कुलर माइग्रेशन, पॉवर्टी एलेविएशन एंड मार्जिनिलिटी, इंटरनेशनल माइग्रेशन, 50, 43- 60.

किशोर, के० एंड किरण, वी० (2013), लेबर माइग्रेशन - ए जर्नल फ्रॉम रूरल टू अर्बन। जे० बिजनेस मैनेज एंड सोशल साइंस, आरईएस० 2(5):61-66

राव, एन० एंड ए० मित्रा (2013) "माइग्रेशन, रिप्रेजेंटेशन एंड सोशल रिलेशन: एक्सपीरियंस ऑफ़ झारखंड लेबर टु वेस्टर्न उत्तर प्रदेश" जनरल ऑफ़ डेवलपमेंट स्टडीज 49 (6) पृ० स०. 846-860

बोडिंग, पी.ओ. (2013), ट्रडिशन्स एण्ड इन्सिटिट्यूशन ऑफ दि संताल्स. न्यू दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस

बी. कुमार (2014), संथाली भाषा, लोकगीत एवं नृत्य. राँची: झारखण्ड झरोखा

केसरी, कुणाल (2014), टेंपरोरी लेबर माइग्रेशन इन इंडिया द पैटर्न्स करेक्टेरिस्टिक्स एंड डिटर्मिनान्ट्स (पीएच.डी. थीसिस), गाइडेड बाय भगत आर० बी०, डिपार्टमेंट ऑफ़ माइग्रेशन एंड अर्बन स्टडीज, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंस

एम. रॉय (2016), लाइफस्टाइल एंड कल्चर ऑफ़ द संथाल्स ऑफ जलपाईगुड़ी डिस्ट्रिक्ट इन द ट्वेंटी सेंचुरी: ए हिस्टॉरिकल आउटलाइन, पृ० स० -221-228

टुडु, मनीश चन्द्र (2018), संथाल जनजाति में देसज ज्ञान (पीएच०डी० थेशिश) (शोध निर्देशक - सिंह प्रभात कुमार) मानवशास्त्र विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची

टूडू दामिन (2018), "माइग्रेशन ऑफ संथाल लेबर्स फ्रॉम झारखंड: ए केस स्टडी." आइ ओ एस आर जनरल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, वॉल्यूम 23 न० 12, पृ० स० 09-13

दत्ता अमृता (2019), कंटिन्यूटी एंड चेंज: माइग्रेशन एंड डेवलपमेंट इन इंडिया, द केस ऑफ़ बिहार (पीएच. डी. थेसिस), गाइडेड बाय प्रोफेसर डॉ. ए. एस. बेदी, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट सोशल स्टडीज ,आईएसबीएन-978-90-6490-097-6

कुजूर आर एवं मिंज एस. के. (2021), प्रोलाइफरेशन ऑफ ट्राइबल माइग्रेंट्स एन्ड रिपरकसन: केस स्टडी फ्रॉम द ट्राईबल एरियाज ऑफ़ सुंदर ग्रह जिला, ओड़िशा (इंडिया) करेंट रिसर्च जनरल ऑफ़ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज 4(1). http://dx.doi.org/10.12944/CRJSSH.4.1.04